ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(9): 178-180
www.allresearchjournal.com
Received: 09-06-2023
Accepted: 14-07-2023

अकील अहमद खाँ
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० एम० हसन
प्राचार्य, डॉ० ज़ाकिर हुसैन टीचर्स
ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अकील अहमद खाँ
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक परिवेश का प्रारंभिक शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव

अकील अहमद खाँ, डॉ० एम० हसन

सारांश
प्रारंभिक शिक्षा का महत्व समाज, आर्थिक विकास, और पारिवारिक समर्थन के प्रति बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विश्वास किया जाता है कि प्रारंभिक शिक्षा न केवल ज्ञान और विज्ञान का एक माध्यम है, बल्कि यह एक बच्चे के जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव डालता है। इस लेख में, हम बच्चों के सामाजिक, आर्थिक, और पारिवारिक परिवेश को कैसे प्रभावित करने में प्रारंभिक शिक्षा के महत्वपूर्ण प्रभावों पर बात करेंगे।

कूटशब्द : प्रारंभिक शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, और पारिवारिक परिवेश

प्रस्तावना
प्रारंभिक शिक्षा हमारे जीवन के एक महत्वपूर्ण हिस्से को प्रभावित करती है, और यह हमारे सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक परिवेश पर गहरा प्रभाव डाल सकती है। इस लेख में, हम इस प्रभाव के कुछ मुख्य पहलुओं को विचार करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि प्रारंभिक शिक्षा के पढ़ाई करने वाले छात्रों पर कैसे असर पड़ता है।

बालक बचपन में सबसे अधिक अपने माता-पिता के सम्पर्क में रहता है। माता-पिता ही बालक के भावी व्यक्तित्व के निर्माता होते हैं। बाल्यकाल का हर क्षण उनके सान्निध्य में व्यतीत होता है। माता-पिता का व्यक्तित्व, उनका सामाजिक व्यवहार, बातचीत का तरीका, पारस्परिक आचरण, रूचि सभी बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते है और यही बालक के आदर्श भी होते हैं। माता का सहयोग बालक के लिये एक दीपक का कार्य करता है जिसकी लौ से बालक का भविष्य प्रज्वलित होता है। जिन संस्कारों का उद्भव हम बालक में चाहते हैं वह माता-पिता द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता-पिता बालक के कैरियर के प्रति चिन्तित होने लगते हैं। ऐसे में पारिवारिक वातावरण का भी बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। परिवार अपने आप में एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है तथा माता-पिता और विद्यालय उसका घर होता है जो जीवन पर्यन्त बालक का प्रदर्शन करते हुए उसे प्रगति की ओर ले जाता है।

परिवार में शिक्षा एवं प्रशिक्षण के साथ-साथ अनुदेशन की प्रक्रिया भी चलती है। अतः परिवार के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक वातावरण का बालक के मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

माता-पिता में मधुर सम्बन्ध न होने पर बालक में अच्छे गुणों का विकास नहीं होता है । इस तरह का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास को अधिक प्रभावित करता है जिसके कारण वह अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता है और शैक्षिक रूप से वह पिछड़ जाता है। अतः पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत सुविधाऐं व पारिवारिक प्रोत्साहन आदि कारण बालकों की अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं।

अभिवावक जिस छवि को बालक के अन्तःकरण में स्थापित करते हैं बालक भविष्य में वही बनने की कोशिश करता है। इस कार्य में शिक्षक व्यवहार बालक की रूचि, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो सकती है। जब बालक अध्ययन करते हैं तो उन्हें अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन व पुनर्बलन मिलना चाहिए क्योंकि इसका शैक्षिक गतिविधियों की प्रकृति एवं व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

गृह वातावरण बालक के प्रारम्भिक शिक्षा का आधार बनता है जिसमें बालक अपने अभिभावक एवं परिवार के अन्य सदस्यों में अपना व्यवहार निर्धारित करता है पारिवारिक वातावरण स्वस्थ होने पर बालक का सर्वागीण विकास उचित ढंग से होता है। देखा जाता है कि अधिकांश परिवारों का वातावरण स्वस्थ नहीं रहता। माता-पिता छोटी-सी बात को लेकर झगड़ते रहते हैं। परिवार के लोगों का रहन-सहन उनकी आदतें, अभिवृत्तियाँ, आकांक्षाएँ आदि बालक के शैक्षिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक के व्यवहार को सकारात्मक बनाया जा सकता है। सकारात्मक सोच बालक के शैक्षिक विकास को काफी प्रभावित करती है।

परिवार बालक का अनौपचारिक विद्यालय है जिसमें बालक अपनी शिक्षा का आधार तैयार करता है। इसके लिये अभिभावक ही बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं को पहचान कर उसे प्रोत्साहित करते हैं। बालक केवल सीमित समय के लिये विद्यालय से जुड़ा रहता है उसका अधिकांश समय अपने पारिवारिक वातावरण में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में न केवल बालक की शिक्षा अपितु उसके अन्य क्षेत्रों का विकास भी प्रभावित होना स्वाभाविक है।

सामाजिक प्रभाव

सामाजिक उन्नति– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को समाज में उन्नति की ओर बढ़ा सकती है। उन्हें ज्ञान, सामाजिक नैतिकता, और आत्म-समर्पण के मूल सिद्धांतों का ज्ञान होता है, जो उन्हें समाज में सफल बनने के लिए मदद करते हैं।

सामाजिक समर्पण– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को सामाजिक समर्पण की भावना देती है। वे समाज के साथ मिलकर किसी भी समाजिक समस्या के समाधान में भाग लेने के लिए तैयार होते हैं।

सामाजिक समझदारी– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को सामाजिक मुद्दों को समझने और समर्थन देने की क्षमता प्राप्त कराती है। यह उन्हें समाज में सही और गलत के बीच अंतर को समझने में मदद करता है।

आर्थिक प्रभाव

रोजगार के अवसर– प्रारंभिक शिक्षा उच्च शिक्षा और अच्छे रोजगार के अवसरों की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यह छात्रों के वित्तीय और पेशेवर विकास के लिए महत्वपूर्ण होती है।

आर्थिक स्वावलंबन– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में मदद कर सकती है। वे अधिक जानकार होते हैं और उन्हें आर्थिक योजना बनाने और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक उपकरण प्राप्त होते हैं।

आर्थिक विकास– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों के आर्थिक विकास को गति देती है। यह उन्हें अधिक जॉब और व्यवसायिक अवसरों के लिए प्राप्ति करने में मदद कर सकती है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होती है।

पारिवारिक प्रभाव

पारिवारिक सहायता– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को अपने पारिवारों की सहायता करने का अवसर प्रदान कर सकती है। वे ज्ञान और विशेषज्ञता का स्रोत बन सकते हैं, जिससे परिवार की सार्थकता में सुधार होता है।

पारिवारिक उन्नति– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों के पारिवारिक जीवन को भी उन्नति देती है। यह उन्हें और उनके परिवार के लिए

बेहतर सामाजिक और आर्थिक संभावनाओं की ओर बढ़ने का मार्ग प्रदान करती है।

पारिवारिक समर्थन– प्रारंभिक शिक्षा छात्रों को उनके परिवारों के साथ बेहतर संबंध बनाने का मौका देती है। यह छात्रों को उनके माता-पिता और परिवार के सदस्यों के साथ समर्थन और सहायता प्रदान कर सकती है।

मनुष्य व्यक्तिगत विशेषताएँ पारिवारिक अनुभवों से ही प्राप्त करता है। किसी भी व्यक्ति में विशिष्ट गुणों का विकास उसके पारिवारिक पर्यावरण के अनुभवों पर ही निर्भर करता है। बालक के जीवन के प्रारम्भिक पारिवारिक अनुभवों का प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन के विभिन्न पक्षों पर विशेष रूप से पड़ता है। इस सम्बन्ध में रेनवार महोदय का कहना है कि - बालक के पर्यावरण में रहने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति विशेष के प्रारम्भ में माता-पिता बाद में परिवार के अन्य सदस्यों तथा बालक के मध्य होने वाले परस्पर व्यवहार से व्यक्तित्व बनता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बालक के बौद्धिक स्तर व्यक्तित्व विकास तथा उनकी योग्यताओं पर माता-पिता की अभिवृत्तियों का अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। अभिवृत्तियों का प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। बालक विद्यालय में पढ़ता है पढ़ने के उपरान्त उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण होने का माता-पिता पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव से बालक प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है साथ ही साथ परिवार के आकार प्रकृति आदि का प्रभाव भी बालक की शिक्षा पर पड़ता है एवं पढ़ने की योग्यता पर भी बालक परिवार में स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

उच्च शिक्षा प्राप्त माता-पिता की आकांक्षाएँ अपने बालकों के प्रति अत्यधिक उच्च होती है। अशिक्षित माता-पिता के बालकों की निष्पत्ति अच्छी नहीं होती है। इसी प्रकार घर में यदि सांस्कृतिक वातावरण अच्छा नहीं है तो विद्यालय में बालक की अभिव्यक्ति ठीक प्रकार की नहीं हो सकती है।

भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार के प्रतिमानों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। अब परिवार का आकार दिन-प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। व्यावसायिक गतिशीलता अब अधिक होने के कारण परिवार की संरचना बदल रही है। बालकों की शिक्षा की ओर माता-पिता ध्यान अवश्य देते हैं परन्तु उनमें निराशा इस बात की अधिक रहती है कि क्या पढ़ने लिखने के बाद बच्चों को कोई कार्य मिल सकेगा।

निष्कर्ष

प्रारंभिक शिक्षा हमारे बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उनके सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक परिवेश को प्रभावित करती है। यह उन्हें सामाजिक सद्भावना, आर्थिक स्वावलंबन, और पारिवारिक समर्थन में सुधार कर सकती है, जिससे हमारे समाज का और भी विकसित होने का संकेत मिलता है। प्रारंभिक शिक्षा न केवल बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज और समृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसलिए, हमें इसे अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे समाज के सभी बच्चे इसके सारे लाभों को प्राप्त कर सकें।

संदर्भ

1. डॉ. अरूण कुमार सिंह, शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी
2. प्रोफेसर एस.पी. गुप्ता, एवं डॉ. अल्का गुप्ता, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
3. वार्षिक रिपोर्ट, डी.पी.ई.पी 2012-2013-राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद जयपुर
4. आर लाल, एवं जैन, शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
5. डॉ.एस.सी ऑबेरॉय, शिक्षा मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, करोलबाग नई दिल्ली।